संदेश

मुझे प्रसन्नता है कि जनपद हाथरस की सामाजार्थिक समीक्षा का यह ग्यारहवां अंक प्रकाशित होने जा रहा है

जनपद की सामाजार्थिक गतिविधियॉ का क्रमि अध्ययन एवं समीक्षा करना परमावश्यक है क्योंकि विकास के पथ में आर्थिक एवं सामाजिक अवस्थापनायें समय के साथ–साथ परिवर्तित होती रहती है । प्रस्तुत पुस्तिका में जनपद हाथरस की प्रगति की समीक्षा की गई है । यद्यपि किसी जिले का परिचय, प्राकृतिक संसाधन, जनशक्ति, कृषि एवं सम्वर्गीय व्यवसाय, मत्स्य पशुधन, शिक्षा, चिकित्सा, संचार तथा अन्य सेवाओं की विवेचना करना अपने आप में एक शोध का विषय है और इसके लिये पर्याप्त अनुभव एवं अध्ययन की आवश्यकता है फिर भी जहॉ तक सम्भव हो सका है, सीमित समय में विषय सामग्री का समीक्षात्मक रूप प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।

प्रस्तुत पुस्तिका श्री आर0के0गुप्ता, अर्थ एवं संख्याधिकारी–हाथरस के मार्ग निर्देशन में श्री गंगा राम–सहायक अर्थ एवं संख्याधिकारी, श्री अजयपाल सिंह–कार्टोग्रा0असि0 एवं श्री शराफत अली–कनिष्ठ सहायक के सराहनीय प्रयासों द्धारा तैयार की गई है । अतः यह सभी वधाई के पात्र हैं ।

(एम0एस0त्रिपाठी)
मुख्य विकास अधिकारी
हाथरस ।

प्राक्कथन

वर्ष–1980–81 से अर्थ एवं संख्या प्रभाग, नियोजन संस्थान उत्तर प्रदेश के निर्देशानुसार जनपद की सामाजार्थिक समीक्षा पूर्व में अर्थ एवं संख्याधिकारी, कार्यालय–अलीगढ़ द्धारा नियमित रूप से प्रकाशित की जाती रही है । प्रस्तुत अंक सामाजार्थिक समीक्षा का प्राक्कथन जनपद हाथरस का ग्यारहवॉ अंक है ।

जनपद की सामाजार्थिक गतिविधियों का क्रमिक अध्ययन एवं समीक्षा करना परमावश्यक है क्योंकि विकास के पथ में आर्थिक एवं सामाजिक अवस्थापनायें समय के साथ–साथ परिवर्तित होती रहती है । प्रस्तुत पुस्तिका में जनपद हाथरस की प्रगति की समीक्षा की गई है । यद्यपि किसी जिले का परिचय , प्राकृतिक संसाधन, जनशक्ति कृषि एवं सम्वर्गीय व्यवसाय, मत्स्य पशुधन, शिक्षा, चिकित्सा, संचार तथा अन्य सेवाओं की विवेचना, करना अपने आप में एक शोध का विषय है और इसके लिये पर्याप्त अनुभव एवं अध्ययन की आवश्यकता है फिर भी जहॉ तक सम्भव हो सका है सीमित समय में विषय सामग्री का समीक्षात्मक रूप प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है तथा इसको और अधिक उपयोगी बनाने हेतु आपके द्धारा भेजे गये सुझावों का स्वागत है ।

प्रस्तुत पुस्तिका अधोहस्ताक्षरी के निर्देशन में श्री गंगा राम–सहायक अर्थ एवं संख्याधिकारी, श्री अजय पाल सिंह– कार्टोग्राफिक असि0 एवं श्री शराफत अली–कनिष्ठ सहायक के सराहनीय प्रयासों द्धारा तैयार की गयी है । अतः यह सभी वधाई के पात्र है।

दिनांक–20.5.07

(आर0के0गुप्ता)
अर्थ एवं संख्याधिकारी
हाथरस ।

विषय सूची

क0सं0	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1	2	3
1–	भौगोलिक संरचना, भूमि संरचना, प्रशासनिक संरचना एवं जलवायु–	1–4
2–	जनशक्ति, जनगणना सम्बन्धी विस्तृत समीक्षा	5–7
3–	आर्थिक स्थिति, जिला आय की प्रवृत्ति, विभिन्न सेकटरों में स्थित ग्रामीण/नगरीय भाव एवं मजदूरी दरों की प्रवृत्ति	8–12
4–	भूमि उपयोग, भूमि जोत, कृषि, उर्वरक, बीज वितरण उत्पादन, उत्पादकता फल सरंक्षण, भूमि संरक्षण, भण्डारण विपणन एवं सिचांई	13–18
5–	पशुपालन, मत्स्य पालन, कुक्कुट पालन तथा तत्सम्बन्धी उत्पादन	19–21
6–	विधुत खनिज उधोग एवं आर्थिक गणना	22–23
7–	सहकारिता एवं बैंकिंग	24–27
8–	सड़क परिवहन एवं संचार	28–30
9–	श्रम एवं रोजगार, औधोगिक प्रशिक्षण संस्थान	31
10–	सामाजिक सेवायें, शिक्षा, चिकित्सा, पेयजल, समाज कल्याण से संचालित समस्त कार्यक्रम पर्यटन एवं मनोंरंजन	32–34
11–	जिला योजना के अन्तर्गत वार्षिक तुलनात्मक अध्ययन, बीस सूत्रीय कार्यक्रम एवं अन्य विकास कार्यो की एक झलक	35–36
12–	महत्वपूर्ण मदों के जिला विकास संकेंतांक प्रमुख समस्यायें एवं सुझाव ।	37–38

अध्याय–1

भौगोलिक संरचना, भूमि संरचना, प्रशासनिक संरचना एवं जलवायु

1–जनपद–हाथरस सामान्य पुनरीक्षण :–

उ0प्र0 के जनपद– हाथरस के 1840.10वर्ग कि0मी0 के क्षेत्रफल जो प्रदेश की कुल का 0.72 प्रतिशत है, में वर्ष–2001 के जनगणना के अनुसार 1336031 व्यक्ति निवास करते हैं । जनपद का जनसंख्या धनत्व 726 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। जनपद में 04 तहसील, 07 विकास खण्ड एवं आवाद ग्राम 656 एवं गैर आवाद ग्राम 16 हैं

जनपद की जलवायु निम्नवर्ती जनपदों की अपेक्षा अधिक शुष्क एवं गर्म है और यहॉ औसत वार्षिक वर्षा 714 मि0मी0 है, जनपद में प्रायः दोमट किस्म की मिट्‌टी पाई जाती है, जिसमें जल स्तर 50 फुट से 100 फुट के मध्य है ।

जनपद की लगभग 80 प्रतिशत जनसंख्या गॉवों में निवास करती है जिसमें से लगभग 25.2 प्रतिशत जनसंख्या अनुसूचित जाति की है । जनपद मे साक्षरता प्रतिशत 62.49 है ।

वर्ष–2004–05 में कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल 178987 है0 है जिसमें शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 148767 है0 भूमि है, कुल प्रतिवेदित क्षेत्रफल में शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 82.3 प्रतिशत है तथा मुख्य फसलों के अन्तर्गत गन्ना 2, तिलहन 14408, आलू 20411ह0 तथा एक बार से अधिक बायो गया क्षेत्र 91941 शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल 148135 है ।

प्रशासनिक आधार पर जनपद को 04 तहसीलों तथा 07 विकास खण्डों में विभाजित किया गया है । जनपद में 64 न्याय पंचायतें एवं 672 मात्र ग्राम है, जिसमें से 656 आबाद ग्राम हैं तथा 16 गैर आबाद ग्राम हैं, 02 नगर पालिका परिषद, 07 नगर पंचायते तथा 10 पुलिस स्टेशन कार्यरत हैं ।

जनपद में आवागमन की दृष्टि से बस स्टेशन/बस स्टाप 72 तथा रेलवे स्टेशन (हाल्ट सहित) 13 हैं । बड़ी लाईन व छोटी लाईन दोनों ही जनपद की सम्पर्क लाइनें हैं ।

सार्वजनिक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण कार्यक्रम के अन्तर्गत एलौपेथिक चिकित्सा 10 तथा आयुर्वेदिक 19, होम्यापैथिक 08, यूनानी 01 एवं 09 परिवार एवं शिशु कल्याण केन्द्र भी कार्यरत हैं ।

(स्थिति एवं भौतिक विशेषतायें)

जनपद– हाथरस का भौगोलिक क्षेत्रफल 1840.10 वर्ग कि0मी0 क्षेत्र में उ0प्र0 के आगरा मण्डल में 25.27, 20.11 उत्तर आक्षांश तथा 75.26, 76.37 पूर्वी देशान्तर रेखाओं के मध्य स्थित है । इस जनपद की सीमा पूर्व में जनपद एटा तथा पश्चिम में मथुरा तथा उत्तर दिशा में जनपद– अलीगढ़ की सीमा तथा दक्षिण दिशा में जनपद आगरा की सीमा को छूती है, जनपद की भौतिक विशेषताओं का विवरण निम्नप्रकार हैः–

1–नदियॉ :–

जनपद–हाथरस में सरबन नदी बहती है जनपद में यह यमुना की दूसरी सहायक नदी है जो कि 86 कि0मी0 लम्बाई में बहती है । यह जनपद–आगरा में यमुना से मिलती है ।

2–तापमान एवं वर्षाः–

जनपद की जलवायु शुष्क है, यहॉ शीतकाल प्रदेश के पूर्वी जनपद की अपेक्षा अधिक समय तक रहता है, ग्रीष्म ऋतु से पश्चिमी हवाओं की प्रबलता वर्षा ऋतु के आगमन से पूर्व तक बहती है, शीत ऋतु में कभी–कभी हल्की वर्षा भी हो जाती है ।

मई तथा जून के महीनों में उत्तर पश्चिमी चक्रवती तूफानों का यदाकदा असर रहता है ।

तापमान का ब्यौरा निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है

वर्ष	उच्चतम	न्यूनतम
2003–2004	46	7

वर्षा–	सामान्य	मि0मी0	–2005	शून्य
	वास्तविक	,,	–2005	714

जनपद में जलवायु की मात्रा असमान रहती है, वर्ष–1997 एवं 2000 में जनपद सूखागस्त रहा था । आगरा मण्डल के सभी जनपदों में वर्षा सामान्य से लगभग आधी रही । जनपद में भूमिगत जल कम गहराई पर एवं प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, यहॉ का जल स्वास्थ्यवर्धक एवं कृषि पैदावार के लिये उपयुक्त है । केवल मुरसान के कुछ क्षेत्रों में पानी खारा है । भूमिगत जल की औसत गहराई 50 से 100 फुट तक है ।

1–मिट्टी :

जनपद की मिट्टी सामान्य दोमट है परन्तु लैण्ड के विभिन्न अनुपात में होने के कारण इसको भिन्न–भिन्न नामों से पुकारा जाता है, मिट्टी कि किस्म के अनुंसार क्षेत्र आच्छादित निम्नप्रकार हैः–

मिट्टी की किस्म	प्रतिशत	क्षेत्र
1–मटियार	53.0	समस्त तहसीले
2–पीलिया	8.0	सासनी
3–पिकनौट	4.0	सिकन्दराराऊ
4–ऊसर/बंजर	9.0	समस्त तहसील
5–खादर	8.0	सादाबाद
6–भूड़	8.0	सासनी,सिकन्दराराऊ
7–अन्य	10.0	समस्त तहसील

(क्षेत्रफल एवं प्रशासनिक ढाचॉ)

(अ) क्षेत्रफलः– जनगणना 2001 अनुसार जनपद–हाथरस का भौगोलिक क्षेत्रफल 1840.10 वर्ग कि0मी0 है जो कि आगरा मण्डल के कुल क्षेत्रफल का 8.02 प्रति0 एवं प्रदेश के क्षेत्रफल का 0.72 प्रतिशत है । क्षेत्रफल का तहसीलवार एवं विकास खण्डवार विवरण क्रमशः तालिका 3 में दर्शाया गया है

क0सं0	विकास खण्ड का नाम	विकास खण्ड का क्षेत्रफल(कि0मी0)
1	2	3
1–	सासनी	268.51
2–	हाथरस	238.16
3–	मुरसान	225.56
4–	सादाबाद	296.40
5–	सहपऊ	176.70
6–	सिकन्दराराऊ	262.02
7–	'हसायन	289.14
योग ग्रामीण		1756.49
योग नगरीय		43.82
योग जनपद		1840.10

क्षेत्रफल की दृष्टि से तहसील हाथरस सबसे बड़ी एवं छोटी सासनी है ।

(ब) प्रशासनिक संरचनाः–

प्रशासनिक दृष्टि से जनपद को 04 तहसील एवं 07 विकास खण्डों में विभाजित किया गया जिसका विवरण। निम्नप्रकार हैः–

क0सं0	तहसील का नाम	तहसीलवार विकास खण्ड का नाम
1–	हाथरस	हाथरस, मुरसान
2–	सादाबाद	सादाबाद, सहपऊ
3–	सासनी	सासनी
4–	सिकन्दराराऊ	सिकन्दराराऊ, हसायन

अध्याय–2

(जनशक्ति, जनगणना सम्बन्धी विस्तृत समीक्षा)

(1) जनंसख्याः– वर्ष–2001 जनगणना के अनुसार जनपद– हाथरस की जनसंख्या 1336031 है, जिसमें 718930 पुरूष एवं 617101 महिलाऐं हैं । जनपद की लगभंग 80 प्रतिशत जनसंख्या गॉवों में निवास करती है ।2001 की जनसंख्या के अनुसार जनपद की जनसंख्या निम्न तालिका में प्रदर्शित की गई है ।

क्र0सं0 विकास खण्ड का नाम	कुल जनसंख्या	अनु0जा0/अनु0 जनजाति	कर्मकार कुल
1 2	3	4	5
1–सासनी	180861	54089	50639
2–हाथरस	158735	47156	45423
3–मुरसान	156243	46037	47772
4–सादाबाद	184966	37573	65034
5–सहपऊ	107711	26787	32697
6–सि0राऊ	136542	29161	37802
7–हसायन	146493	41487	42584
योग ग्रामीण	1071551	282290	321951
योग नगरीय	264480	54449	70019
कुल योगः–	1336031	336739	391970

2–धनत्वः

–––––– जनगणना 2001 के अनुसार जनसंख्या धनत्व 726 व्यक्ति प्रति वर्ग कि0मी0 है

3–लिंग अनुपातः–

–––––––––– जनगणना 2001 के अनुसार जनपद में प्रति हजार पुरूषों पर स्त्रियों की संख्या 858 है ।

4– अनु0जा0/जनजाति :–

–––––––––––––– 2001 की जनगणना के अनुसार जनपद में अनुसूचित जाति की जनसंख्या–336739 है । जिसमें पुरूष 181283 तथा महिलायें 155456 है, अनु0 जाति की जनसंख्या जनपद की कुल जनसंख्या का 25.20 प्रतिशत है ।

5–कर्मकर :–

–––––––– जनगणना 2001 के अनुसार जनपद में कुल कर्मकारों की संख्या–391970 है, जिसमें मुख्य कर्मकर 295388 है तथा सीमान्त कर्मकर 96582 हैं ।

2001 की जनगणना के अनुसार कर्मकरों के अनुसार कर्मकरों का विवरण निम्नप्रकार है जो तालिका में दर्शाया गया है ।

क्रमांक मद	व्यक्तियों की संख्या
1–कृषक	116033
2–कृषक मजदूर	53382
3–पारिवारिक उधोग	17089
4–अन्य	108884
5–कुल मुख्य कर्मकर	295388
6–सीमान्त कर्मकर	96582
कुल	391970

कुल जनसख्याओं में विकलांग व्यक्तियों का प्रतिशत(2001) –25.2

साक्षरता

जनगणना 2001 के अनुसार कुल साक्षर व्यक्तियों की संख्या–675483 है जिसमें पुरूष 445192 तथा महिलायें 230291 हैं । 2001 की जनगणना के अनुसार कुल जनसंख्या में साक्षरता का प्रतिशत 62.49 है ।

–: वनसम्पदाः–

राष्ट्रीय वन नीति के अनुसार भारत में वनों का क्षेत्रफल कुल भूमि का 33 प्रतिशत होना चाहिए । इस मापदण्ड के आधार पर जनपद में वनों का क्षेत्रफल नगण्य है जो भी वन क्षेत्र उपलब्ध हैं वे वन महोत्सव तथा वृक्षारोपण कार्यक्रम के अन्तर्गत नहरों व सड़क के किनासरे एवं नदियों के क्षेत्रों में लगाये वृक्षों का परिणाम है ।

अन्य वनों में मुख्यतः शीशम, बबूल, आम , महुआ, जामुन के चृक्ष पाये जाते हैं ।

जनपद में वनों का विकास खण्डवार क्षेत्र निम्न तालिका में दिया गया है ।

–: वर्ष–2004–05:–

क्र0सं0	विकास खण्ड का नाम	वन क्षेत्र (हैक्टेयर में)
1–	सासनी	227
2–	हाथरस	141
3–	मुरसान	173
4–	सिकन्दराराऊ	61
5–	हसायन	66
6–	सादाबाद	108
7–	सहपऊ	1314
योगः–	ग्रामीण	2090

–: अध्याय– 3:–

आर्थिक स्थिति, जिला आय की प्रवृत्ति, विभिन्न सेक्टरों में स्थित ग्रामीण/नगरीय भाव एवं मजदूरी दरों की प्रवृत्ति :–

स्थानीय निकायवार आय व्यय की सूचना :– जनपद में 02 नगरपालिका परिषद एवं 07 नगर पंचायतें हैं जो अपने–अपने क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की जन–सुविधायें एवं विकास कार्य कर रही हैं । जिनमें सड़क सफाई आदि निर्माण कार्य पेयजल हेतु टंकी आदि निर्माण कार्य जैसे मूलभूत सुविधायें सम्मिलित है। ।

ज्नपद–हाथरस के विभिन्न निकायों(वर्ष–2005–06) के आय–व्यय का ब्यौरा निम्नप्रकार है :–

क्0सं0	विवरण	कुल आय (हजार रू0)	कुल व्यय (हजार रू0)
1–	जिला पंचायत–हाथरस	4543000	2777000
2–	नगरपालिका परिषद		
	1– सिकन्दराराऊ	33665145	23490215
	2– हाथरस	98496236	57585131
3–	नगर पंचायत		
	1– सासनी	5685983	3813497
	2– पुरदिल नगर	5115370	2722556
	3– मुरसान	5402521	7204181
	4– मेडू	5367018	3300000
	5– हसायन	3549865	3151345
	6– सहपऊ	1492520	872678
	7– सादाबाद	16174302	13735581
	कुल योगः–	42787579	34799838

<u>जनपद के राजस्व श्रोत :–</u> जनपद के राजस्व श्रोतों में बिक्रीकर(व्यापार कर) मुख्य देयक एवं विविध देयक शामिल हैं मुख्य देया में भू–राजस्व से प्राप्ति, भूमि विकास कर , सिंचाई देय तकावी एक्ट–12, तकावी एक्–19, कृषि तकावी, जी0एम0एफ0एन0ई0एस0 तथा सीड स्टार शामिल हैं । जबकि विधि देयकों में खर्चा चकबन्दी,बृद्धतोतकर वन देय मार्ग कर राज्य, विधुत देय, वित्त निगम, अन्य निगम, बैंक देय, अन्य केन्द्रीय देय, निष्कासित सम्पत्ति, हर्जाना देय, कमी स्टाम्प आपूर्ति आदि शामिल हैं ।

भावः– दैनिक उपभोक्ता वस्तुओं के भाव उतार चढ़ावे मॉग एवं पूर्ति सिद्धान्त पर निर्भर करता है । कुछ वस्तुओं के कलैण्डर वर्ष–2006जनवरी से दिसम्बर,06के औसत भाव निम्न तालिका में दर्शाये गये हैं ।

अध्याय–4

भूमि उपयोग, भूमि जोत, कृषि, उर्वरक, बीज वितरण उत्पादन, उत्पादकता फल सरंक्षण, भूमि संरक्षण , भण्डारण, विपणन तथा सिंचाई ।

भूमि उपयोगिताः–

जनपद में कृषि को सबसे महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि जनपद की अर्थ व्यवस्था कृषि पर आधारित है । वर्ष–2004–05 में जनपद के कुल प्रतिवेदित क्षेत्र 178987 है0 में से 148768 है0 शुंद्ध बायो गया क्षेत्र था ।

भूमि उपयोगिता निम्न तालिका में प्रदर्शित की गई है ।

क्र0सं0	भूमि उपयोगिता	वर्ष–2004–05
1–	वन	2090
2–	कृषि योग्य बंजर भूमि	1935
3–	वर्तमान परती	2158
4–	अन्य परती	2746
5–	ऊसर एवं कृषि आयोग्य	3439
6–	कृषि के अतिरिक्त अन्य उपयोग	16512
7–	चारागाह	981
8–	उधानों एवं वृक्षों एवं झाड़ियो का क्षेत्रफल	358
9–	शुद्ध बोया गया क्षेत्र	148768
10–	कुल प्रतिवेदित क्षेत्र	178987
11–	शुद्ध सिंचित क्षेत्र(है0)	148135
12–	एक से अधिकवार बोया गया क्षेत्रफल	91941

फसलचक्र :– जनपद में रबी, खरीफ एवंज ायद सीजन के अन्तर्गत फसल उगाई गई है इसके साथ–साथ यहॉ भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि वर्ष में चार फसलें उगाई जाती है । उदाहरण स्वरूप क्रमशः एक ही क्षेत्र में मूॅग, मक्का, लाही एवं गेंहू का उत्पादन किया जाता है ।

इसी तरह शाक आदि में भी यह क्रम रहता है, इस सन्दर्भ में यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि वर्ष–2004–05 में सकल बोया गया है क्षेत्रफल 193659 है शुद्ध बोया गया क्षेत्रफल 148768 है एक बार से अधिक बोया गया क्षेत्रफल 91941 है ।

अधिक उपज प्रगति के अन्तर्गत क्षेत्राच्छान्वनः–खेती पद्धति को प्रभावित करने वाले कई तत्व है । भौगोलिक तत्व में मुख्य मौसम एवं टोपोग्राफी है । भौतिक तत्व जैसे भूमि व रसायनिक संगठन, आद्रता इत्यादि परम्परागत तत्व जैसे सांस्कृतिक, मानवीय आदते अन्य तबनीकि का प्रयोग इसके अतिरिक्त मुख्यतः आर्थिक कारण जैसे पूॅजी की उपलब्धता जोत का आकार, बाजार भाव आदि खेती की पद्धति को प्रभावित करते हैं । नीचे की तालिका जनपद में खेती की पद्धति एवं आच्छादित क्षेत्र को स्पष्ट करती है ।

क्र0सं0	फसल का नाम	वर्ष–2004–05 क्षे़फल
1–	धान/चावल	9536
2–	बाजरा	48713
3–	मक्का	4746
4–	गेंहू	92265
5–	जौ	6600
6–	चना	237
7–	मटर	89
8–	अरहर	8120
9–	लाही/सरसो	13997
10–	ज्वार	52
11–	गन्ना	490
12–	आलू	20411

उर्वरक वितरण/उपयोगः– जनपद में वर्ष–2004–05 में उर्वरक वितरण की स्थिति निम्नलिखित से स्पष्ट हैः–

वर्ष	न्त्रजन	फोस्फैटिक	पौटाश	योग
2004–05	20337	9452	776	30565

मुख्य फसलों के अन्तर्गत उत्पादन निम्नप्रकार रहा :–

क्र0सं0	फसलों का नाम	वर्ष–2004–05(उत्पादन कु0)
1–	धान	209400
2–	गेंहूँ	2803530
3–	जौ	177320
4–	बाजरा	826670
5–	अरहर	71270
6–	चना	2940
7–	मटर	1420
8–	लाही / सरसों	166490
9–	मक्का	83130
10–	ज्वार	390

<u>भूमि सुधार</u>:– जनपद– हाथरस में भूमि सुधार के अन्तर्गत ऊसर सुधार कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं, जिसकी अर्थ बन्धया या बॉध अथवा अनुपजाऊ होता है , भूमि में ऊसर लापन, मिट्टी में लवणता या क्षारीपन या दोंनों की अधिकता के कारण ऊसरीकरण होता है

मृदा नमूनों की लेवारेटरी से जाच कराकर मिंट्टी का उपयोग सम्बन्धी कार्य को सम्पादित कर जिप्सम, पाइराइट एवं जिन्स सल्फेट से उसमें सुधार कर उसे उपजाऊ बनाना ऊसर करना आदि है ।

भूमि सम्बन्ध में संरक्षण सम्बन्धी कार्य उत्तर प्रदेश ऊसर सुधार निगम तथा भूमि संरक्षण अधिकारी कार्यालय के द्वारा क्रियान्वयन किया जा रहा है । भूमि सुधार निगम के मुख्य उद्देश्य निम्नप्रकार हैः–

(1) 4 है0 क्षेत्र एक बोरिंग निःशुल्क कराई जायेगी इस बोरिंग को सार्वजनिक सम्पत्ति माना जायेगा और निर्दिष्ट क्षेत्र के सभी लाभार्थी इससे पानी लेने के हकदार होंगे ।

(2) कृषकों के खेत की मिट्टी की जॉच कराई जायेगी और इसके आधार पर खेत को सुधारने हेतु आवश्यक मात्रा में जिप्सम/पाइराइट निःशुल्क उपलब्ध हो जायेगी ।
(3) कृषक द्वारा जिप्सम/पाइराइट का प्रयोग सुनिश्चित करने के बाद भूमि की श्रेणी के अनुसार अनुमन्य कृषि निवेश एवं सुविधायें उपलब्ध कराई जायेगी एवं सी श्रेणी की भूमि हेतु अलग–अलग सुविधाये निर्धारित हैं । खेत को सुधारने एवं फसल उत्पादन की अन्य सभी व्यवस्थायें कृषकों को सुनिश्चित करनी होगी ।
कृषि उत्पादन पर आधारित अन्य कार्यक्रम :– कृषि उत्पादन के अन्तर्गत राष्ट्रीय तिलहन विकास योजना का कार्यक्रम चलाया जा रहा है जिसमें राइजोरिम कल्चर वितरण एवं मटर का खण्ड प्रदर्शन किया जा रहा है ।

मृदा परीक्षण सम्बन्धी योज5ना, तिलहन उत्पादन कार्यक्रम भी चलाया जा रहा है । जनपद अभियान के अन्तर्गत खण्ड प्रदर्शन योजना में सूरजमुखी, मूँग, उर्द आदि बीज मिनीकिट संकर प्रजाति के, का वितरण भी शासन स्तर से जनपद स्तर पर कराया जा रहा है ।

इन सब के अतिरिक्त सबसे मुख्य कार्य प्रशिक्षण एवं सम्पर्क योजना है, जिससे ग्रामीण स्तर पर कृषकों को प्रशिक्षण का सुचारू रूप से समस्त 07 विकास खण्डों में चलाया जा रहा है एवं नई–नई तकनीकि एवं विधियों से कृषकों को अवगत कराकर तिलहन, दलहन एवं अन्य खाद्य पदार्थो के उत्पादन में सक्रीय वृद्धि हो रही है ।

कृषि उत्पादन से सम्बन्धित अन्य कार्यक्रमों में इस जनपद में लाहा से तेल निकासी, खल आदि निर्माण प्रक्रिया सम्बन्धी कार्य जगह–जगह स्थापित है, इसमें कई आयल–मिले हैं ।

कई आटा मिल जनपद–हाथरस में स्थपित है, धान से चावल निकालने की मिलें सिकन्दराराऊ में स्थापित हैं । जनपद–हाथरस में कई दाल मिलें भी कार्यरत हैं ।

उपरोक्त सभी मिले कृषि उत्पादन से सम्बन्धित है जो कि बड़े विस्तृत रू‍ से कार्य कर रही हैं । इसके अलावा अनेक लोगों को रोजगार प्रदान कर कृषकों के जीवन स्तर में लगातार सुधार कर रहे हैं ।
कृषि एवं भण्डारण सुविधायें :– जनपद के प्रत्येक विकास खण्ड मुख्यालय पर एक–एक बीज गोदाम/उर्वरक डिपो के अतिरिक्त जनपद में 73 ग्रामीण गोदाम है, जिसकी क्षमता

4950 मी0टन है । इसके अतिरिक्त विकास खण्ड– सिकन्दराराऊ में एक बीज वृद्धि का फार्म है एवं जनपद में 26 शीत भण्डार ,जिसकी क्षमता 669800 मी0टन0 है तथा 04 कृषि उत्पादन मण्डी समिति स्थित हैं । जनपद में कृषि उपज के संग्रहण सम्बन्धित कार्य में महत्वूपर्ण भूमिका स्टोर/कृषि गोदाम की भी है । इस जनपद में भारतीय खाद्य निगम एवं राज्य भण्डारागार निगम के खाद्यान्न भण्डार है जिसकी क्षमता क्रमशः 14220 एवं 11403 मी0टन है । इसके अतिरिक्त कृषकों के अपने निजी गोदाम/ कोठी/रमला भी इस्तेमाल किये जा रहे हैं, जिसमें कीट रक्षा रसायन उपयोग कर अनाज को सुरक्षित रखने का व्यवस्था है ।

समस्त कृषकों को अपनी उपज का उचित मूल्य मिलता है एवं यह मण्डी समितियों का समस्त भण्डार कर ऋण भी उपलब्ध कराती है, जिससे कृषक को धान अनवाश्यक होने पर उपज को बेचना नहीं पड़ता है, प्रक्रिया से कृषक का अनावश्यक शोषण नहीं होता है ।

सिंचाईः– जनपद में भू–स्तरीय तथा भूमिगत जल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है, नदियों, नहरों एवं तालाबों द्वारा भू–सतरीय जल तथा नलकूपों के छिदुण द्वारा भुगर्भीय जल का अधिकाधिक उपयोग के प्रयास किये जा रहे हैं, इसी कारण से निजी नलकूपों की संख्या में निरन्तर वृद्धि हो रही है ।

वर्ष–1991–92 में निजी नलकूपों की संख्या–71520 थी जो वर्ष–2001–02 में बढ़कर 126478 हो गई है ।

राजकीय नलकूपों द्वारा सिंचित क्षेत्रफल का प्रतिशत 1.6, निजी नलकूपों द्वारा सिंचित क्षेत्रफल का प्रतिशत 86.6 है, शेष 11.8 प्रतिशत अन्य साधनों द्वारा सींचा जा रहा है ।

जनपद– हाथरस में विकास खण्डवार सिंचाई साधनों एवं स्त्रोतों की 31 मार्च,2006 की स्थिति निलम्नप्रकार हैः–

क्र0सं0	विकास खण्ड का नाम	नहर	लम्बाई(कि0मी0)	राजकीय नलकूप
1–सासनी		नहर	5	35
2–हाथरस		,,	76	11
3–मुरसान		,,	58	10

4–सादाबाद	,,	122	–
5–सहपऊ	,,	60	21
6–सिकन्दराराऊ	,,	250	25
7–हसायन	,,	18	28
योगः–		589	130

वर्ष–2003 में जनपद में निजी नलकूपों की संख्या–10855 है तथा भू–स्तरीय पम्पसैट की संख्या–70 है । यह पम्पसैट विकास खण्ड सादाबाद एवं सहपऊ में स्थापित है, अन्य विकास खण्डों में भू–स्तरीय पम्पसैटों की मात्रा शून्य है । वर्ष–2002–03 में बोरिंग पर लगे पम्पसैटों की कुल संख्या–3391 अधिक मात्रा विकास खण्ड–हसायन में 5867 तथा सबसे कम मात्रा विकास खण्ड सासनी में 3258 है ।

<u>जनपद में निजी नलकूपों की संख्या विकास खण्डवारः–(31 मार्च, 2004)</u>

क0सं0	विकास खण्ड का नाम	संख्या
1–	सासनी	2767
2–	हाथरस	1317
3–	मुरसान	1382
4–	सादाबाद	2388
5–	सहपऊ	1296
6–	सिकन्दराराऊ	929
7–	हसायन	776

अध्याय—5

पशु पालन, मत्स्य पालन, कुक्कुट पालन तथा तत्सम्बन्धी उत्पादनः— जनपद में पशुपालन व्यवसाय को आर्थिक महत्व देने की दशा में यह आवश्यक है कि पशुओं की नस्ल में सुधार, स्वास्थ्य रक्षा एवं उचित मात्रा में पोष्टिक आहार हेतु समुचित व्यवस्था की जाय । ताकि विदेशों की भॉति दुधारू पशुओं की उत्पादकता में वृद्धि हो सके । जनपद में पशुओं की नस्ल सुधार एवं स्वास्थ्य रक्षा हेतु वर्ष—2005—06 में निम्न सुविधायें उपलब्ध हैं :—

क0सं0	सुविधायें	ग्रामीण	नगरीय
1—	पशुचिकित्सालय	07	08
2—	पशुधन विकास केन्द्र	23	—
3—	कृत्रिम गर्भाधान केन्द्र/उपकेन्द्र	07	08
4—	पौल्ट्री यूनिट राजकीय	—	—
5—	सूअर विकास केन्द्र	01	06

पशुधन कृषि का अपरिहार्य अंग हैं इस महत्व को देखते हुए जनगणना की भॉति 05 वर्षोपरान्त प्रदेश में पशुगणना कराई जाती है । इसी परिप्रेक्ष्य में जनपद की अन्तिम पशुगणना 2003 में की गई थी जो निम्न तालिका में तुलनात्मक स्थिति दर्शायी गई है :—

क्रमांक	मद का नाम	संख्या
1—	गौजातीय देशी	45297
2—	गौजातीय क्रोससीड	9879
3—	कुल गौजातीय	55176
4—	महिष जातीय	353594
5—	भेड़	8427
6—	बकरा, बकरियॉ	83932
7—	घोड़े एवं टट्टु	1203
8—	सूअर	13398

9— अन्य पशु	7489
10—कुल पशु	523219
11—कुल मुर्गे,मुर्गियॉ एवं चूजे	25035
12—अन्य कुक्कुट	385
13—कुल कुक्कु ट	25420

जनपद में पशुधन विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत उच्च स्तर के कृत्रिम गर्भाधान हेतु विदेशी साड़, तरल वीर्य उपलब्ध कराये जा रहे हैं, इसके अतिरिक्त प्रजनन हेतु केन्द्र पर रखे गये बकरे आदि भी शामिल है । अच्छे किस्म के चारा बीज वितरण, पोष्टिक आहार अच्छे किस्म की पशु स्वास्थ्य चिकित्सा सुविधायें भी शामिल हैं व इसके लिये प्रयासरत हैं, इस सन्दर्भ में पशुधन विकास हेतु दुग्ध कार्यक्रम चल रहा है ।

जनपद में दुग्ध उत्पादन को बढावा देने हेतु विकास खण्ड—सासनी में अलीगढ़ आगरा मार्ग पर दीनदयाल योजना के अन्तर्गत 587 करोड़ रूप्ये की लागत से 60000 ली0 प्रति दिन हेण्डिल करने वाली दुग्धशाला चल रही है । दुग्धशाला के स्थापित होने से हाथरस एवं आस—पास के नगरों में शुद्ध दूध उचित मूल्य पर स्थापित होने के साथ—साथ 05 हजार परिवारों को सीधे—सीधे लाभ प्राप्त होता है ।

पशुधन विकास कार्यक्रम इतने बड़े स्तर पर चलाये जा रहा हैं, लेकिन पशुओं की संख्या की तुलना में स्वास्थ्य एवं चिकित्सालय सम्बन्धी व्यवस्था की गई है, जिसके सुधार हेतु प्रयास जारी है ।

जनपद— आगरा में ताज महल को प्रदूषण से बचाने के लिए ढुलाई की सभी दकाईयों को बन्द कर दिया गया हैं, यह अधिकतर इकाईयॉ विकास खण्ड—सासनी क्षेत्र के हाथरस, अलीगढ़ मार्ग पर स्थापित की जा रही हैं ।

जनपद में जनसंख्या में हो रही वृद्धि के कारण साधान्न उत्पादनों में भी उसी अनुपात में वृद्धि परम आवश्यक है शासन के अथक प्रयास एवं प्रशिक्षण चलाये जा रहे विशेष कार्यक्रमों के फलस्वरूप भी खाधान्न उत्पादन में पर्याप्त मात्रा में वृकद्ध नहीं हो रही है । अतः वैकप्लिक रूप से मत्स्य खाधान्न उत्पादन की इस कमी को पूरा करने हेतु विशेष पूरक के रू॰ में अपना महत्व रखती है । स्थानीय जनता में मत्स्य उपभोग प्रचलित नहीं है ऐसी स्थिति में मछली उत्पादन का जहॉ मत्स्य का उपभोग होता है, वही उत्पादन को निर्यात किया जा सकता है, जनपद मत्स्य उत्पादन की दृष्टि से पिछड़ हुआ है ।

जनपद में विभाग द्वारा अँगुलिकाओं का विवरण विकास खण्डवार हजार सं0 में निम्नप्रकार हैः–

क्र0सं0	विकास खण्ड का नाम	2005–06
1–	हाथरस	137
2–	सासनी	0
3–	मुरसान	100
4–	सादाबाद	230
5–	सहपऊ	440
6–	सिकन्दराराऊ	500
7–	हसायन	460

जनपद में मत्स्य पालन विकास अभिकरण की स्थापना मत्स्य में वृद्धि लाने के उद्देश्य से की गई थी, इसके मुख्य उद्देश्य ग्राम सामज के तालाबों को पात्र व्यक्तियों को 10 वर्षीय पट्टा राजस्व विभाग के माध्यम से दिलाने में सहयोग प्रदान करना है ।

अध्याय—6

विधुत खनिज उधोग एवं आर्थिक गणना

1—विधुतः— जनपद में विधुत शक्ति का उपयोग कृषिगत कार्यो में सबसे अधिक हैं तथा प्रति व्यक्ति उपभोग में वृद्धि हुई है ।

क0सं0	मद का नाम	2004—05
1—	घरेलू प्रकाश एवं लघु विधुत शवि	57748
2—	वाणिज्यिक प्रकाश एवं लघु विधुतशक्ति	10910
3—	औधोगिक विधुत शक्ति	40840
4—	सार्वजनिक प्रकाश व्यवस्था	4560
5—	रेल/ट्रक्शन	0
6—	कृषि विधुत शक्ति	77202
7—	सार्वजनिक जल कल एवं मल प्रवाह उर्द्ध व्यवस्था	1190
	योगः—	192450

जनपद में समस्त नगरीय क्षेत्र विधुतीकृत है, जिसमें घरेलू उधोग एवं कृषि आदि कार्यो हेतु सुविधा उपलब्ध है । केन्द्रीय विधुत प्राधिकरण की परिभाषा के अनुसार 656 ग्राम 31 मार्च,2006 तक विधुतीकृत थे, एल0टी0 मेंस विछाकर 603 ग्रामों का विधुतीकरण किया जा चुको है ।

नलकूप/पम्पसेट ऊर्जीकरण की स्थिति भी सनतोषजनक है, ऊर्जीकरण की विकास खण्डवार स्थिति निम्नतालिका में दर्शायी गई है ।

(वर्ष—2005—06)

वर्ष/विकास खण्ड	चिधुतीकरण ग्राम		विधुतीकृ अनु0 जाति बस्तियों की संख्या	ऊर्जीकृत निजी नलकूपों/पम्पसेंटों पम्पसेंटों की संख्या
	के0वि0प्रा0की परि0के0अनुसार	जिनमें एल0टी0मेन्स लगा दिये गये है।		
1— सासनी	115	99	69	3681
2— हाथरस	106	103	78	1973
3— मुरसान	143	114	79	2075
4— सादाबाद	71	71	68	2835
5— सहपऊ	63	63	51	1417
6— सिकन्दराराऊ	65	65	58	1725
7—हसायन	93	88	44	1528
योगः—	656	603	447	15234

(2) खनिजः– जनपद खनिज सम्पत्ति के द्रष्टिकोण से प्रायः निर्धन है, यहॉ पर ऐसी कोई चीज नहीं पायी जाती है, जिससे खनिज का कार्य हो सके ।
(3) उधोगः– जनपद की अर्थव्यवस्था कृषिगत अर्थ व्यवस्था है, जिस पर जनसंख्या का लगभग 80 प्रतिशत भाग निर्भर करता है, जिससे कृषि पर जनसंख्या का भार कम करने की आवश्यकता है । कृषि पर जनसंख्या का भार कम करने हेतु औधोगिकरण ही एक महत्वपूर्ण विकल्प है ।

जनपद में एक औधोगिक आस्थान है जिसमें शेड एवं प्लाटों की संख्या आवंटित 223 एवं कार्य 94 है । इन शेड्स एवं प्लाटों में लगी इकाईयों द्वारा लगभग 9510 लाख रूपये मूल्य का उत्पादन किया जा रहा है ।

जनपद– हाथरस का चाकू, रेडीमेड वस्त्र, रंग,हींग, तम्बाकू आदि उधोग है जिनका औधोगिक क्षेत्र में अपना विशेष सीन है । सरकार की नवीन औधोगिक नीति के अनुसार जिला उधोग केन्द्र की सीपना निम्न उ्देश्य की पूर्ति हेतु की गयी है :–

1– वर्तमान औधोगिक इकाईयों की समस्याओं का अध्ययन एवं उनका समाधान ।
2– प्रशिक्षण का प्रबन्ध एवं उधमियों का उत्सावर्धन ।
3– उधमकर्ताओं को नये उधोग सीपित करने हेतु प्रोत्साहन तथा प्रोजेक्ट को तैयार करना
4– औधोगिक इकाईयों के लिये कच्च्र माल भूमि शेड्स विधुत ऋण तकनीकी सहायता यंत्रों, मशीनों तथा उत्पादन सामिग्री की व्यवस्था करना ।
5– उधोगपतियों को उत्पादन, बिक्री तथा फैक्ट्री अधिनियमों आदि के सम्बन्ध में विधि परामर्श करना ।
6– बैकों के माध्यम से वित्तीय सहायता प्राप्त करना ।

आर्थिक गणना–1998

क0सं0 मद का नाम	ग्रामीण	नगरीय	योग
1– उद्यमों की संख्या			
1.1 कृषि	484	68	552
1.2 अकृषि	8172	10256	18428
1.3 योग	8656	10324	18980
2–संस्थानों की संख्या जिनमें सामान्य तथा भोड़े पर व्यक्ति कार्यरत हैं (कृषि +अकृषि)	269	3504	3773
3–स्वकार्य उद्यमों की संख्या (कृषि+अकृषि)	7387	6820	14207
4–उधमों में सामान्य तथा कार्यरत व्यक्ति (अवेतनिक तथा भाड़े पर कार्यरत)			
4.1 पुरूष	16065	21413	37478
4.2 स्त्री	3445	836	4281
4.3 योग	19510	22249	41759
5– भोडत्रे पर सामान्यत या कार्यरत व्यक्ति			
5.1 पुरूष	5024	9176	14200
5.2 स्त्री	1061	537	1598
5.3 योग	6085	9713	15798

अध्याय–7

सहकारिता एवं बैकिंग

सहकारिता:–पूँजीवाद एवं साम्यवाद अर्थ व्यवस्था के मध्य का मार्ग सहकारिता में निहित है । निजी स्वामित्व के साथ–साथ सहकारिता में सार्वजनिक कल्याण की भवनायें भी समाहित हैं ।

सहकारी नीतियों एवं कार्यावधि के दृष्टिकोण से जनपद में 91 प्रारम्भिक कृषि सहकारी समिति एवं 03 क्रय–विक्रय सहकारी समितियॉ कार्यरत हैं । प्रारम्भिक कृषि ऋण सहकारी समितियों में 133644 सदस्य हैं । इनकी अंशपूॅजी 48878 हजार रूपये, कार्यशील पूॅजी 433480 हजार रूपये एवं जमा धनराशि 15826 हजार रूपये है इन समितियों द्वारा वर्ष–2005–06 में 195878 हजार रूपये अल्पकालीन ऋण वितरित किया गया है ।

इन समितियों के अन्तर्गत जनपद के समस्त 656 ग्राम सम्मिलित हैं ।

वर्ष/वि0ख	संख्या	सदस्यों की संख्या	अंशपूॅजी (000रू0)	कार्यशील (000रू0)	जमा धनराशि (000रू0)	वर्ष में वितरित ऋण	
						अल्पकालीन (000रू0)	मध्यकालीन (000रू0)
1–सासनी	06	12486	4719	41269	1563	19762	–
2–हाथरस	13	14695	4975	112678	1635	15985	–
3–मुरसान	11	12698	5396	75853	1716	32368	–
4–सादाबाद	16	27618	13563	89872	5275	25874	–
5–सहपऊ	10	21563	8675	87965	1978	29538	–
6–सि0राऊ	18	19598	5683	42965	1964	46196	–
7–हसायन	17	24986	5867	52878	1625	26153	–
योग ग्रामीण	91	133644	48878	433480	15826	195878	–

वर्ष/वि0ख	समितियों के अन्तर्गत ग्राम	सहकारी कृषि एवं ग्राम वि0बैंक द्वारा वितरित ऋण (000 रू0 में)	सहकारी बैंक शाखायें
1–सासनी	115	21439	–
2–हाथरस	116	57085	.
3–मुरसान	143	18078	–
4–सादाबाद	71	21687	–
5–सहपऊ	63	14081	1
6–सि0राऊ	65	18792	–
7–हसायन	93	21569	–
योग ग्रामीण	656	172729	1
योग नगरीय	–	–	8
योग जनपद	656	172729	9

प्रारम्भिक कृषि ऋण सहकारी समितियों के अन्तर्गत सबसे अधिक सदस्य सादाबाद में हैं एवं सबसे कम सि0राऊ में हैं । अंश पूँजी सबसे अधिक विकास खण्ड सादाबाद एवं सबसे कम सि0राऊ की है । अल्पकालीन ऋण सबसे अधिक विकास खण्ड सादाबाद में तथा सबसे कम विकास खण्ड सिकान्दरा राऊ में वितरित किया गया है ।

जनपद में इनके साथ–साथ अन्य समितियॉ भी कार्यरत हैं जिनका पूर्ण विवरण निम्नप्रकार है :–

1 **प्रारम्भिक दुग्ध उत्पादन सहकारी समितियॉ**	वर्ष–2005–06
1.1 संख्या	758
1.2 सदस्यता संख्या	32851
1.3 कार्यशील पूँजी(000रू0)	15318
1.4 वर्ष में विक्रय किये गये उत्पादन का मूल्य(000रू0)	31985817
2–**मत्स्य सहकारी समितियॉ**	
1–संख्या	–
2–सदस्य संख्या	–

3–कार्यशीलपूॅजी(000रू0)	–
4–वर्ष में विक्रय किये गये मत्स्य का मूल्य(000रू0)	–

3–**बुनकरों की प्रारम्भिव औधोगिक सहकारी समितियॉ**

1–संख्या	50
2–सदस्य संख्या	2498
3–कार्यशील पूॅजी(000रू0)	1369
4–वस्त्र उत्पादन वर्ष में मात्र(000 मी0)	15367
मूल्य(000 रू0)	184534

4– **गन्ना सहकारी समितियॉ**

1–संख्या	–
2–सदस्यता	–
3–कार्यशील पूॅजी(000 रू0)	–
4–वर्ष में वितरित उत्पादकों का मूल्य(000 रू0)	–

5–**क्रय विक्रय सहकारी समितियॉ**

1–संख्या	3
2–सदस्यता	6515
3–वर्ष में लेनदेन की गई वस्तुओं का मूल्य(000रू0)	13562

:–बैंकिंग–:

जनपद में विभिन्न योजनाओं के सफल कार्यान्वयन एवं अर्थ व्यवस्था को सुदृण करने, गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों के आर्थिक स्तर को सुधारने एवं स्वतः रोजगार योजनाओं को सफल बनाने में संस्थागत वित्त बैंक का महत्वपूर्ण स्थान है । जनपद में संस्थागत वित्त की उपलब्धता हेतु निम्न बैंक शाखायें कार्यरत हैं ।

क0सं0	बैंक शाखा का नाम	2005–06
1–	राष्ट्रीय बैंक	43
2–	ग्रामीण बैंक	30
3–	सहकारी बैंक	09
4–	सहकारी कृषि एवं ग्राम्य विकास बैंक	04
5–	अन्य व्यवसायिक बैंक	07

जनपद में सहकारी बैंक एवं भूमि विकास बैंक वर्ष–2005..06 की स्थिति का ब्यौरा निम्नप्रकार है:–

1– शाखायें	09
2– सदस्यता संख्या	275
3– हिस्सा पूॅजी(00रू0)	36242
4– कार्यशील पूॅजी	1635219
5– ऋण वितरण(000 रू0)	
(5.1) अल्पकालीन	195876
(5.2) मध्यकालीन	–

(2) सहकारी कृषि एवं ग्राम्य विकास बैंक

1– शाखायें	04
2– सदस्यत6	8600
3– हिस्सा पूॅजी(000 रू0)	11196
4– कार्यशील पूॅजी(000र	208800
5– ऋण वितरण(000 रू0)	172729

बैंक शाखाओं के प्रसार में बराबर वृद्धि हो रही है, नई बैंक शाखायें ग्रामीण अचलों में नगरीय क्षेत्रों में खोली जा रही है, ताकि दूरस्थ स्थानों में रहने वाले प्रत्येक व्यक्तियों को इनका लाभ मिल सके ।

:–अध्याय–8:–

:– सड़क परिवहन एवं संचार–:

सड़क परिवहन:–जनपद में सड़कों का जाल विछा हुआ है । सड़कों द्धारा प्रत्येक तहसील एवं विकास खण्ड मुख्यालय जिला मुख्यालय से जुड़ा है । सार्वजनिक निर्माण विभाग द्धारा 1176 कि0मी0 लम्बी सड़कों को निर्माण वर्ष–2004–05 तक कराया जा चुका है ।

इसके अतिरिक्त जिला पंचायत/नगर परिषद/नगर पंचायत के अन्तर्गत 185 कि0मी0 लम्बी पक्की सड़के हैं यह आशा की जाती है कि न्यूनतम आवश्यकता कार्यक्रम के अन्तर्गत 15000 से अधिक आबादी वाले ग्राम सम्पर्क मार्गो से जुड़ जायेगें । इस उद्‌देश्य की पूर्ति हेतु राज्य सरकार बराबर प्रयत्न कर रही है ।

वर्ष–2004–05 में प्रति लाख जनसंख्या पर पक्की सड़कों की लम्बाई 108.3 कि0मी0 थी ।

सार्वजनिक निर्माण विभाग, स्थानीय निकाय एवं अन्य विभागों के अन्तर्गत अनुरक्षित सड़कों की 2004–05 में निम्नप्रकार थी :–

<u>सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधीन</u>		
1–राष्ट्रीय राज मार्ग	कि0मी0	0
2–प्रादेशिक राज मार्ग	,,	61
3–मुख्य जिला सड़के	,,	31
4–अन्य जिला एवं ग्रामीण सड़के	,,	1084
योग:–		1176
<u>स्थानीय निकायों के अधीन</u>		
1–जिला पंचायत	कि0मी0	30
2–नगर निगम/नगर पालिका परि0/	,,	185
योग:–		215
<u>अन्य विभाग</u>		
1–सिंचाई विभाग	कि0मी0	18
2–गन्ना विभाग	,,	–
3–अन्य	,,	–
योग:–		18
कुल योग:–		1409

वर्ष/विकास खण्ड	पक्की सड़कों की लम्बाई		सब ऋतु सड़कों से जुड़े ग्रामों की संख्या		
	कुल	लो0नि0वि0	100 से कमवाले ग्राम	100 से 1499 तक ग्राम	1500 अधिकवाले ग्राम
1–सासनी	224	217	36	19	37
2–हाथरस	121	110	29	24	22
3–मुरसान	177	168	53	20	21
4–सादाबाद	205	198	13	14	44
5–सहपऊ	141	135	12	12	28
6–सि0राऊ	163	158	15	07	28
7–हसायन	177	174	34	17	26
योगः–ग्रामीण	1208	1160	192	113	206
योग नगरीय	201	16	–	–	–
योग जनपद	1409	1176	192	113	206

जनपद में माल परिवाहन हेतु अनेक ट्रक/मेटाडोर आदि कार्य कर रहें हैं जो लाखों टन माल ट्रान्सपोर्ट के माध्यम से महाराष्ट्र, पं0बंगाल, विहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश, राजस्थान को भेजा जाता है । इस तरह कोई सरकारी ऐजन्सी कार्यरत नहीं है, बल्कि प्राइवेट ऐजेन्सियों द्धारा ही यह कार्य सम्पन्न कराया जाता है ।

रेल परिवहनः–जनपद हाथरस आगरा फोर्ट से लखनऊ वाया बरेली जंक्शन एवं आगरा फोर्ट से कानपुर वाया कासगंज मीटर गेज लाइन से जुड़ा हुआ है, के साथ–साथ हाथरस जंक्शन से दिल्ली हाबड़ा ब्राडगेज लाइनों से भी जुड़ा हुआ है जिन पर कुल 13 रेलवे स्टेशन है मीटर गैज लाइन पर आगरा फोर्ट, गोकुल एक्सप्रेस तथा काठगोदाम एक्सप्रेस आदि संचालित है तथा ब्राडगैज लाइन पर कालका मेल, महानन्दा एक्सप्रेस, मुरी एक्सप्रेस, लालकिला एक्सप्रेस व फरक्का एक्सप्रेस आदि गाड़ियॉ संचालित है । रेल परिवहन का जनपद के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान है ।

:—संचार व्यवस्था:—

संचार व्यवस्था:—विकासशील अर्थ व्यवस्था में संचार व्यवस्थाओं का भी अपना एक अलग योनदान है जनपद में इसकी पूर्ति हेतु 153 डाकघरों में से 137 ग्रामीण व 16 नगरीय क्षेत्रों में हैं, जो कि संदेश वाहक धनादेश के अतिरिक्त राष्ट्रीय बचत योजना सम्बन्धी महत्वपूर्ण कार्य भी सुचारू रूप से कर रहे हैं । पब्लिक काल ऑफिस 1248 से 452 ग्रामीण व 796 नगरीय क्षेत्र में हैं ।

(वर्ष—2005—06 की स्थिति)

वर्ष / विकास खण्ड	डाकघर	तारघर	पी0सी0ओ0	टेली0	रेलस्टे0	बस स्टे0
1—सासनी	24	01	38	869	01	12
2—हाथरस	18	01	95	998	03	09
3—मुरसान	15	—	69	589	—	09
4—सादाबाद	18	01	49	785	01	10
5—सहपऊ	19	—	65	638	01	04
6—सि0राऊ	21	—	78	958	01	14
7—हसायन	22	—	58	587	02	06
योग ग्रामीण	137	03	452	5424	08	64
योग नगरीय	16	04	796	16958	05	08
योग जनपद	153	07	1248	22382	13	72

————————0000——————————

–: अध्याय–9:–

जनपद–हाथरस नगर एक लघु औधोगिक नगर है फिर भी जनपद कृषि प्रधान नगर है यहॉ की जनसंख्या लगभग 80 प्रतिशत ग्रामीण अंचल में निवास करती है तथा मुख्य रूप से कृषि एवं कृषि सम्बन्धित व्यवसाय जीविकोंपार्जन का साधन है । जनपद में विगत कुछ वर्षो में औधोगिक, आर्थिक, कृषि एवं शिक्षा के सम्बन्ध में उल्लेखनीय विस्तार के कारण जनपद के रोजगार के अवसरों में वृद्धि हुई है । लेकिन जिस गति से शिक्षा एवं जनंसख्या में वृद्धि हुई है उस गति से रोजगार के अवसरों में वृद्धि नहीं हुई है । जनपद–हाथरस के सेवायोजन कार्यालय के माध्यम से एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण करने से ज्ञात हुआ है कि माह–मार्च,2006के अन्त में 16900 अभ्यर्थी पंजीकृत थे । वित्तीय वर्ष में 10065 अभ्यर्थी पंजीकृत हुये थे, वर्ष में सृजित रिक्त पदों की संख्या 11 के सापेक्ष में किसी व्यक्ति को रोजगार प्रदान नहीं किया गया । वर्ष में अधिसूचित रिक्तियों पर सम्प्रेषित अभ्यार्थियों की संख्या 7 है ।

औधोगिक प्रशिक्षण संस्थानः– जनपद मुख्यालय पर औधोगिक प्रशिक्षण संस्थान कार्यरत है, जिसमें मोटर वाईडिंग, फिटर, आशुलिपिक आदि विभिन्न ट्रेडों में प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है । वित्तीय वर्ष–2006 में सीटों की संख्या 223 थी, जिसके सापेक्ष में 223 प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया ।

————————0000————————

–: अध्याय–10:–

सामाजिक सेवायें, शिक्षा, चिकित्सा, पेयजल, समाज कल्याण से संचालित समस्त कार्यक्रम पर्यटन एवं मनोरंजन।

शिक्षाः–विकास हेतु शिक्षा का विशेष महत्व है । शिक्षित समाज का देश के विकास में विशेष महत्व होता है । शिक्षा का स्तर अच्छा है यह उस स्थान विशेष की प्रारम्भिक शिक्षा पर निर्भर करता है । इस समय जनपद में 1426 जू0बे0स्कूल है, जिनमें लड़के एवं लड़कियॉ दोनों को ही शिक्षा प्रदान की जाती है ।

इसके अतिरिक्त सीनियर बेसिक स्कूल 387 हैं, जिनमें ग्रामीण क्षेत्रों में 337 जिसमें बालिकाओं के लिए 30 है, नगरीय क्षेत्रों में 50 जिसमें 07 बालिकाओं के लिए है ।

जनपद में हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट विधालयों की संख्या–154 है, जिसमें ग्रामीण में 102 जिनमें 01 बालिकाओं के लिए नगरीय क्षेत्र में 52, जिनमें 14 बालिकाओं के लिए है ।

जनपद में 05 महाविधालय एवं 3 स्नातकोत्तर महाविद्यालय है जिनमें 4 ग्रामीण एवं 1 नगरीय क्षेत्र में हैं ।

वर्ष/वि0ख0	जूनियर बेसिक	सीनियर बेसिक		हायर सेकेण्डरी स्कूल		महाविधालय/स्नातकोत्तर महाविधालय	विश्व विधा–लय	पोली टेक्नि
		कुल	बालिका	कुल	बालिका			
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1–सासनी	172	51	5	13	1	1	–	–
2–हाथरस	187	47	8	14	–	–	–	–
3–मुरसान	162	61	1	15	–	–	–	–
4–सादाबाद	181	45	7	17	–	1	–	–
5–सहपऊ	161	31	3	16	–	1	–	–
6–सि0राऊ	178	46	2	17	–	–	–	–
7–हसायन	165	56	4	10	–	1	–	–
योग ग्रा0	1206	337	30	102	1	4	–	–
योग नगरीय	220	50	07	52	14	1	–	01
योग जनपद	1426	387	37	154	15	5	–	01

(2) चिकित्साः–स्वास्थ्य नागरिक देश में मानव शक्ति सृजित करता है । नागरिकों की परिचर्या एवं स्वास्थ्य रक्षा के लिए जनपद में व्यापक प्रबन्ध किया गया है । प्रदेश में स्वास्थ्य के प्रति सरकार अत्यन्त ही सजग है । इसी क्रम में प्रदेश सरकार द्वारा स्वास्थ्य सम्बन्धी योजनाऐं क्रियान्वित करने हेतु इस जनपद में निम्न सुविधायें एवं चिकित्सालय/औषधालय स्थापित किये गये हैं ।

क्रमांक मद	वर्ष–2005–06
1–राजकीय सार्वजनिक	37
2–राजकीय विशेष(क्षय)	01
3–स्थानीय निकाय एवं नगर पालिका	02
4–सहायता प्राप्त निजी	–
5–सहायता प्राप्त निजी	–
6–आर्थिक सहायता प्राप्त	–
योगः–	40

उपरोक्त ऐलापैथिक चिकित्सा सेवा केन्द्रों के अतिरिक्त 19 आयुर्वेदिक चिकित्सालय, एक यूनानी चिकित्सालय/औषधालय एवं 8 होम्योपैथिक चिकित्सालय/औषधालय कार्यरह है । 15 परिवार एवं मातृ शिशु कल्याण केन्द्र एवं 156 परिवार एवं मातृ शिशु कल्याण उपकेन्द्र कार्यरत हैं । जिनमें ऐलापैथिक चिकित्सा सेवा में 50 डाक्टर 480 पैरामेडीकल तथा अन्य कर्मचारी कार्यरत हैं ।

आयुर्वेदिक चिकित्सा सेवा में 13, यूनानी चिकित्सा सेवा में 01 एवं हौम्यापैथिक चिकित्सा सेवा में 7 डाक्टर भी कार्यरत हैं ।

जनपद में विभिन्न सेवा चिकित्सा सेवा सुविधाओं का पूर्ण विवरण निम्न तालिका में दर्शाया गया है ।

क्रमांक विवरण	ग्रामीण	नगरीय	योग
1–ऐलोपेथिक चिकित्सा सेवा			
1–चिकित्सालय/औषधालय	5	5	10
2–प्रा0स्वा0के0	25	2	27
3–उपलब्ध शैय्यायें	70	150	220
4–मातृ शिशु एवं परिवार कल्या0केन्द्र			
4.1–मुख्य केन्द्र	07	08	15
4.2–उपकेन्द्र	148	08	156
2–आयुर्वेदिक चिकित्सालय			
1–आयुर्वेदिक चिकित्सालय एवं औष0	19	05	24
2–उपलब्ध शैय्यायें	68	41	109

क्रमांक विवरण	ग्रामीण	नगरीय	योग
3–यूनानी चिकित्सा सेवा			
1–औषाधालय/चिकित्सालय	01	–	01
2–उपलब्ध शैय्यायें	–	–	–
4–होम्योपैथिक चिकित्सा सेवा			
1–औषधालय/चिकित्सालय	07	01	08
2–उपलब्ध शैय्यायें	04	–	04

3–पेयजलः– जनपद में पेयेजल के लिए कोई ग्राम समस्याग्रस्त नहीं है । 31 मार्च,2007 तक सभी 656 ग्रामों में इण्डिया मार्क–2 हैण्डपम्पों द्वारा पेयजल सुविधा से परिपूर्ण किया जा चुका है । अनुसूचित जाति की बस्तियों में विशेष पेयजल कार्यक्रम के अन्तर्गत भी हैण्डपम्प लगाये गये हैं ।

4–समाज कल्याण कार्यक्रमः–दिसम्बर,2006 तक स्थितिः–

1–अनूसचित जाति छात्रवृत्तिः– वर्ष–2005–06 में 146157 अनुसूचित जाति छात्रवृत्ति पर व्यय किये गये ।

2–वृद्धावस्था/किसान पेंशनः–वर्ष–2005–06 में 5.00 लाख रू0 वृद्धावस्था/किसान पेंशन योजना के अन्तर्गत धनराशि व्यय की गयी ।

3–अत्याचार उत्पीड़न हेतु आर्थिक सहायताः–वर्ष–2005–06 में 0.07 लाख रू0 अत्याचार उत्पीड़न हेतु आर्थिक सहायता पर व्यय किये गये ।

4–पर्यटन एवं मनोरंजनः– श्री दाऊजी महाराज का मन्दिर जनपद में पर्यटन की दृष्टि से एक अत्यन्त महत्वपूर्ण प्राचीन धार्मिक स्थल है, इसका मेला भाद्र पक्ष मास की बल्देव छठ से लगता है तथा यह मेल लगभग 15 दिवस तक चलता है । बृज क्षेत्र में इस मेले का विशिष्ट स्थान है । जनपद में कुल 09 छवि गृह हैं ।

अध्याय–11

:–जिला योजना के अन्तर्गत वार्षिक तुलनात्मक अध्ययन, बीस सूत्रीय कार्यक्रम एवं अन्य विकास कार्यो की एक झलकः–

1–जिला योजनाः– जनपद के समग्र विकास के लिए जिला सेक्टर योजना के माध्यम से विभिन्न कार्यक्रमों के लिए धनराशि शासन द्वारा प्रति वर्ष आवंटित कराई जा रही है । विकेन्द्रित नियोजन प्रणाली का प्रारम्भ वर्ष–1982–83 की वार्षिक योजना के हुआ । जिसमें जनपद के अन्तर्गत संचालित योजनाओं की संरचना का उत्तरदायित्व जनपद की आवश्यकता एवं साधनों की उपलब्धता एवं सम्भावनाओं, परिस्थितियों आदि को दृष्टिगत रखते हुए जिला स्तर पर सौपा गया है । जनपद की 05 वर्षो में जिला योजना के अन्तर्गत आवंटित परिव्यय एवं उसके सापेक्ष व्यय का विवरण निम्न प्रकार हैः–

वर्ष	आवंटित परि0 (हजार रू0)	अवमुक्त परि0 (हजार रू0)	व्यय धनराशि (हजार रू0)	अवमुक्त धनराशि से व्यय का प्रति0
02–03	155500	78537	78537	100
03–04	15300	27470	19513	71
04–05	172500	87216	87216	100
05..06	279600	235708	235708	100

2–बीस सूत्रीय कार्यक्रमः–जनपद की बीस सूत्रीय कार्यक्रम में वर्ष–2005–06 में स्थिति निम्नप्रकार रहीः

क्र0सं0 मद	इकाई	वार्षिक लक्ष्य	क्रमिक पूर्ति
(1) सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना	ह0म0दि0	1592000	1592000
(2) अधिशेष भूमि का वितरण	एकड़	07	169.29
(3) पेयजल समस्या(ग्रव/शामिलक्षेत्र)	संख्या	05	47
(4) प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	संख्या	–	–
(5) बाल प्रतिरक्षण	संख्या	42039	43004
(6) एकीकृत बाल विकास सेवा खण्ड सं0	सं0	07	07
(7) आंगनवाड़ी संचयी	संख्या	892	892
(8) अनु0जाति को आर्थिक सहा0			
अ–ग्राम्य विकास विभाग	संख्या	557	640
ब–समाल कल्याण विभाग	संख्या	1170	609
(9) इन्दिरा आवास ग्रामीण	संख्या	934	936
(10)मलिन बस्तियों का सुधार	संख्या	7074	7074

क्0सं0	मद	इकाई	वार्षिक लक्ष्य	क्रमिक पूर्ति
11–	निजी भूमि पर वृक्षारोपण	संख्या	2675000	2680000
12–	शामिल क्षेत्र सार्व0 एवं वनभूमि	है0	167	167
13–	ग्रामों का विधुतीकरण	संख्या	36	36
14–	शक्ति चालित पम्पसैट	संख्या	50	200
15–	बायोगैस संयत्रों की स्थापना	संख्या	10	30

विकास कार्यक्रमः–

1– स्वर्ण जयन्ती ग्राम स्वरोजगार योजनाः–इस योजना के अन्तर्गत वर्ष–2003–04 में 879 लाभार्थियों को लाभान्वित किया गया ।

2– इन्दिरा आवासः– इस योजना के अन्तर्गत वर्ष–2003–04 में 1160 आवास निर्माण के लक्ष्य के विपरीत 1024 आवासों का निर्माण किया गया ।

3–निजी लघु सिंचाईः–इस योजना के अन्तर्गत वर्ष–2003–04 में 281 पम्पसैटों का ऊर्जन लक्ष्य के विपरीत 381 पम्पसैटों का ऊर्जन किया गया ।

5–विकसित चूल्हों का वितरण :– इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 1485 चूल्हों के वितरण लक्ष्य के विपरीत 365 चूल्हों का वितरण किया गया ।

6–बायोगैसः– इस कार्यक्रम के अन्तर्गत बायोगैस संयन्त्र 105 के सापेक्ष में 48 बायोगैस संयन्त्र का निर्माण किया गया ।

7–अनु0जाति को आर्थिक सहायता :– इस कार्यक्रम के अन्तर्गत 1589 अनु0जाति के व्यक्ति को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराने के लक्ष्य के विपरीत 633 व्यक्तियों को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई ।

8–राष्ट्रीय बचत शुद्ध जमा धनराशिः– इस योजना के अन्तर्गत 2900 लाख रू0 लक्ष्य के विपरीत 1841.27 लाख रू0 जमा किया गया ।

————————0000————————

अध्याय–12
–: महत्वपूर्ण मदों के जिला विकास संकेतांकः–

1– कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत	19.8
2– जनसंख्या का धनत्व प्रति वर्ग कि0मी0	726
3– कुल जनसंख्या में अनु0जाति/अनु0जनजाति का प्रतिशत	25.2
4– कुल मुख्य कर्मकरों का प्रतिशत	
अ–कृषक	39.3
ब–कृषि श्रमिक	18.1
स–पारिवारिक उद्योग	5.8
द–अन्य	36.8
5–समस्त जोतों में लघु समीमान्त जोत का प्रतिशत	67.1
6–समस्त जोतों के अन्तर्गत क्षेत्रफल में लघु एवं सीमान्त जोतो के अन्तर्गत क्षेत्रफल का प्रतिशत	38.3
7–शुद्ध बोये गये क्षेत्रफल में शुद्ध सिंचित क्षेत्रफल का प्रतिशत	99.5
8–सकल बोये गये क्षेत्रफल में सकल सिंचित क्षेत्रफल का प्रतिशत	81.4
9–कुल आबाद ग्रामों में विधुतीकृत ग्रामों का प्रतिशत	100
10–प्रति 100 है0 प्रतिवेदित क्षेत्रफल पर पशुधन संख्या	292.3
11–खाधान्न फसलों की औसत उपज(कु0)	25.6
12–प्रति है0 उर्वरक उपभोग कि0ग्रा0	132.6
13–प्रति व्यक्ति उत्पादन(कि0ग्रा0)	
1– अनाज	288.5
2– दालें	6
14–प्रति व्यक्ति जिला योजना	
परिव्यय	872.2
वास्तविक व्यय	972.2

<u>प्रमुख समस्यायें एवं सुझाावः–</u>

1–आगरा अलीगढ़ मार्ग पर क्रासिंग पड़ता है जो शहर के मध्य में स्थित है । रेलगाड़ियों के आने के समय पर मुख्य मार्ग होने के कारण काफी संख्या में वाहन रेलवे क्रासिंग खुलने का इन्तजार करते हैं, काफी वाहन एकत्रित हो जाते हैं, जिससे सड़क यातायात पूरी तरह अवरूद्ध हो जाता है, ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि इस पर ओवरब्रिज का निर्माण कराया जाये ।

2–वर्षा के समय में आगरा अलीगढ़ मुख्य मार्ग पर काफी मात्रा में पानी एकत्रित हो जाता है, जिससे सड़क भी टूटती है तथा आवागमन अवरुद्ध हो जाता है । इसका मुख्य कारण पानी की निकासी का जनपद में न होना है, जिसके लिये आवश्यक है कि ड्रेनेज व्यवस्था का समुचित प्रबन्ध किया जाये ।

3–जनपद लखनऊ से रेल द्वारा सीधे जुड़ा नहीं है जबकि व्यापारिक दृष्टि से जनपद काफी समृद्ध है, लेकिन ट्रेन सुविधा न होने के कारण व्यापारियों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है ।

4–जनपद में खेल गतिविधियॉ बेकार पड़ी हैं क्योंकि यहॉ कोई स्टेडियम नहीं है । यहॉ स्टेडियम का होना आवश्यक है ।

5–जनपद में जेल की कोई व्यवस्था नहीं है जिससे अपराधियों को बन्दी बनाकर दूसरे जनपद में भेजा जाता है, इसलिए यहॉ जेल का होना आवश्यक है ।

6–जनपद की यान्त्रिक व्यवस्था के लिये यहॉ पर अधिक टैम्पो/प्राइवेट बस को परमिट दिये जायें जिससे यहॉ के नागरिकों को जनपद कार्यालय तक टैम्पो द्वारा पहुॅचाया जा सके ।

———————00000————————